दृष्टिहीन बालको के जीवन में संगीत की उपादेयता

सर्वप्रथम तो हमें हमारी दृष्टि में दृष्टिहीन शब्द की परिभाषा को बदलना होगा, क्योकिं दृष्टिहीन तो हम उन्हें भी कह सकते हैं जो गलत कार्य देख के भी अपनी आंखे बन्द कर लेते हैं और जो वास्तव में दृष्टिहीन होते हुए भी किसी गलत कार्य का एहसास होने मात्र से ही उसके खिलाफ आवाज़ उठाने की कोशिश करते हैं, इसलिए दृष्टिहीन होना या ना होना मायने नही रखता, मायने ये रखता है कि हम दोनो ही तरह की अवस्था में क्या कार्य कर रहे हैं या फिर क्या कर सकते हैं।

जी हाँ आज हम बात कर रहे हैं ऐसे ही दृष्टिबाधित बालकों के विषय में जो अपनी कमज़ोरी को कमजोरी न समझ बल्कि उसे अपने लिए एक चुनौती के रूप में स्वीकार करते हैं, और दूसरो के लिए खुद को एक मिसाल की तरह कायम कर देते हैं।

जैसा कि हम सभी लोग जानते हैं कि प्रत्येक मनुष्य में पांच इन्द्रियों का समावेश होता है। जिसमें बौद्ध दार्शनिकों ने कहा है कि पंच ज्ञानेन्द्रियों और मानस के साथ छः प्रकार की चेतनायें मानी हैं। इनके अनुरूप छः प्रकार की इन्द्रियां और छः प्रकार के विषय होते है। इनमें चेतना मन कि इन्द्रि और विचार उसके विषय हैं, अन्य इन्द्रियां और उनके विषय वैसे ही माने गये हैं जैसे की सांख्य दर्शन में मान्य हैं। इस प्रकार पंच इन्द्रियों के अनुरूप पांच प्रकार के विषय हैं। इन इन्द्रियों की बाह्य इन्द्रियां गोलक कहलाती हैं। इस प्रकार नेत्र, कर्ण, नासिका, जिव्हा और त्वचा ये पांच गोलक हैं जो कि रूह, स्वर, गन्ध, रस और स्पर्श को ग्रहण करते हैं।1

इनके साथ ही एक इन्द्रि और भी होती है, जो सबके पास नहीं होती, जिसे हम हिन्दी में छठी इन्द्रि और अंग्रेजी में six-sense के नाम से जानते हैं। विशेषकर इस इन्द्रि का समावेश ऐसे ही दृष्टिहीन बालकों में मिलता है बस हम आम इंसानों को दृष्टिहीन बालको में से इनकी छुपी हुई कला को निकाल के समाज के सामने लाने और बताने की जरूरत है कि दृष्टिहीन बालक व्यर्थ ही इस दुनिया में नही आये हैं उनका कोई अर्थ जरूर है।

विशेषकर दृष्टिहीन बालकों में जिस कला का समावेश होता है वो है संगीत, संगीत के माध्यम से वो अपनी पहचान बना सकते हैं या फिर यूं कहो कि बनाते हैं। तभी समझ आता है कि दृष्टिहीन बालकों के जीवन में संगीत की क्या उपादेयता है। जैसे कि

1. आत्मविश्वास बढाने का साधन –

1.1इन बालकों में आत्मविश्वास जाग्रत करें, इन्हें निराशा, हीन–भावना एवं कुण्ठा से बचायें।2

1.2ऐसे बालकों में जबरदस्त सृजनात्मक शक्ति पाई जाती है। उन्हें गीत–संगीत का ज्ञान देकर एक संगीतज्ञ बनाया जा सकता है।3

यदि किसी दृष्टिहीन बालक के अन्दर इस तरह की सोच विकसित करदी जाये, कि इसमें गायन शैली का हुनर है और वो गा सकता है तो उस बालक के अन्दर हम इस तरह से आत्मविश्वास बढा सकते हैं।

2. मनोरंजन का साधन – नेत्रहीनों के लिए मनोरंजन कायक्रमों का आयेजन करना, दूसरे सामान्य किशोरों से कहीं अधिक आवश्यक और महत्वपूर्ण है। नेत्रहीन किशोरों के लिए मोहल्लो में मनोरंजन क्लब स्थापित किये जाने चाहिए, जहां वे सप्ताह में एक या दो बार जाकर आनन्द प्राप्त कर सकें। ऐसे केन्द्र समाज कल्याण संस्थायें चलायें जिनके चलाने में ऐसे किशोर सहायता करें जो देखने में सक्षम हो। ऐसे क्लबों में कमरों के अन्दर खेले जाने वाले खेल, हॉबी, चर्चामण्डल, नेत्रहीनों को अखबार सुनाना, रेडियों, संगीत और अपनी देखभाल स्वयं करने जैसी कार्यों में प्रशिक्षण देना आदि क्रिया–कलाप हो सकते हैं।4

3. व्यवसाय का साधन – दृष्टिहीन बालकों को यदि बाल्यवस्था से ही शिक्षा दी जाये तो आगे चलकर तो वो इसी क्षेत्र में अपना भविष्य बना सकते हैं। वह या तो स्वयं की संगीत कक्षा लगाके या फिर किसी विद्यालय में संगीत शिक्षक के रूप में कार्य कर एक व्यवसाय की प्रक्रिया को अपना सकते हैं।

4. आत्मनिर्मर बनाने का साधन – यदि दृष्टिहीन बालकों को व्यवसाय का मार्ग मिल जाए तो उसे अपनी ज़रूरतों के लिए किसी के सामने हाथ फैलाने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी।

आज मेरे सामने कई ऐसे उदाहरण हैं जो नेत्रहीन होना अपनी कमज़ोरी न समझ बल्कि उसी को एक चुनौती के रूप में स्वीकार कर आज अपने पैरों पर खड़े हैं और जो दृष्टिहीन हैं भी और नहीं भी दोनो के लिए एक मिसाल कायम करते हैं और इसके साथ ही वो अपना और अपने परिवार का भरण पोषण करने में भी सक्षम हैं। जैसे –

4.1 हमारे इटावा शहर के एक संगीतज्ञ श्री महेशचन्द्र जैन जी (गुरूजी) जिन्होने इटावा के कई किशोर एवं किशोरियों को संगीत शिक्षा दी है और दे भी रहे हैं।

4.2 देहरादून के निवासी श्री सुचित नारंग जो कि आज वहीं के प्रसिद्ध संस्थान एन0आई0वी0एच0 में सम्मानित पद पर विराजमान हैं और साथ ही लता मंगेशकर पुरस्कार से पुरस्कृत भी हैं।

4.3 ऐसे ही चित्रकूट के एक महान विद्वान श्री राम भद्राचार्य जी जिन्होंने खुद दृष्टिहीन होते हुए भी एशिया का प्रथम विकलांग विश्व विद्यालय राम भद्राचार्य विश्वविद्यालय के नाम से स्थापित किया है और इसके साथ ही इन्हें करीब 6–7 जैसे – संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी इत्यादि भाषाओं का भी ज्ञान है। इसके साथ ही इन्होने हिन्दी में एक रामायण भी लिखी है।

5. आत्म संतुष्टि प्रदान करने का साधन – ये एक कड़ी की तरह से है कि यदि हम ऊपर के दो बिन्दुओं को गौर से देखें तो ये बात साफ हो जाती है कि यदि दृष्टिहीन बालकों को बचपन से ही संगीत शिक्षा दें, उन्हें व्यवसाय का मार्ग दिखाया जाये तो वो आत्मनिर्भर बन सकते हैं और अपने आप को किसी के भी ऊपर बोझ न समझ अपना और अपने परिवार का भी खर्चा भी उठा सकते हैं। जिससे वो खुद में आत्म–संतुष्टि का अनुभव प्रदान कर सकते हैं।

इस तरह हम कह सकते हैं कि दृष्टिहीन होना किसी अपंगता को प्रदर्शित नही करता यदि दृष्टिहीन बालक में अपनी उस कमज़ोरी को अपने ऊपर हावी न होने देने का हुनर है या होगा और उसे इस बात का एहसास हो जाए कि वो भी आम इंसानो की तरह अपनी पहचान बना सकता है तो वो खुद ब खुद आम इंसानो की तरह अपनी दिनचर्या में सामान्य व्यवहार कर सकता है और विशेषकर संगीत में अपना भविष्य बना सकता है इसके परिणामस्वरूप हम यह कह सकते हैं कि दृष्टिहीन बालकों के जीवन में संगीत की उपादेयता का एक महत्वपूर्ण स्थान होता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

1. शर्मा रामनाथ, शर्मा रचना (2005) भारतीय मनोविज्ञान एटालांटिक प्रकाशन पृ.116
2. वृन्दासिंह, मानव विकास एवं पारिवारिक संबंध पंचशील प्रकाशन जयपुर पृ.669
3. वृन्दासिंह, मानव विकास एवं पारिवारिक संबंध पंचशील प्रकाशन जयपुर पृ.669
4. बाल्य–कल्याण की रूपरेखा में पृ.330.331

अपर्णा द्विवेदी
शोध छात्रा
वनस्थली विद्यापीठ, (राज.)

डॉ० किन्शुक श्रीवास्तव
प्रोफेसर, संगीत (गायन)
वनस्थली विद्यापीठ, (राज.)